इंश्योरेंस पोर्टफोलियो में महिलाओं की भागीदारी 20% से कम

- लगभग 80 पर्सेंट पॉलिसी होल्डर पुरुष
- ज्यादातर महिलाएं ग्रुप इंश्योरेंस के हवाले

Sudha.Shrimali@timesgroup.com

एक ओर महिलाएं कंधे से कंधा मिलाकर लगभग सभी वित्तीय जिम्मेदारियों को पुरुषों के साथ साझा कर रही हैं लेकिन, जब बात इंश्योरेंस की आती है तो वे कहीं पीछे छूट जाती हैं। यही वजह है कि इंश्योरेंस कंपनियों के लाइफ कवर पोर्टफोलियो में महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 20-23 पर्सेंट हैं। महिलाओं के लाइफ इंश्योरेंस पर्चेज व क्लेम्स ट्रेंड को लेकर करवाई गई रिसर्च रिपोर्ट के आंकड़ों की बाबत बिड़ला सन लाइफ इंश्योरेंस के एमडी पकंज राजदान कहते हैं, 'परिवार के वित्तीय मामलों में महिलाओं की भागीदारी तेजी से बढ़ी है लेकिन अभी भी महिलाओं की लाइफ से जुड़ी रिस्क पर ध्यान नहीं दिया जाता। लाइफ रिस्क को कवर करने के लिए वे प्रॉटेक्शन प्लान को चुनने में पीछे रह जाती हैं। यही वजह है कि हमारे लाइफ इंश्योरेंस पोर्टफोलियो में महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 23 पर्सेंट है।

खुद को महत्व नहीं देना बड़ी वजह: 40 वर्षीय मंजू करपे प्रफेशन से सीए हैं और अपने पति के साथ 40 लाख के होम लोन की ईएमआई को शेयर करती हैं। इतना ही नहीं घर के तमाम खर्चों में आधा कॉन्ट्रिब्यूशन उनका होता है लेकिन, जब बात लाइफ कवर की आती है तो उनके पास सिर्फ 5 लाख रुपये का लाइफ कवर है। इस बाबत इंडिया फर्स्ट की सीईओ व एमडी आर.एम. विशाखा ने बताया, ' महिलाएं अपने आप वैल्यू कहां करती हैं। उनका सेल्फ एस्टीम भी कम होता है। हमारे पोर्टफोलियो में 80% पॉलिसी होल्डर पुरुष है।'

महिलाओं के लिए विशेष प्रॉडक्ट नहीं आईडीबीआई फेडरल लाइफ इंश्योरेंस के सीईओ विघ्नेश साहने कहते हैं, ' हमारे इंश्योरेंस पोर्टफोलियो में भी महिलाओं की भागीदारी सिर्फ 10-15 पर्सेंट है और 80-85 पर्सेंट पॉलिसी होल्डर पुरुष हैं। इसकी मुख्य वजह महिलाओं में इंश्योरेंस को लेकर जागरूकता की कमी है। मार्केट में रिटायरमेंट प्लान, चाइल्ड प्लान से लेकर कई प्लान हैं लेकिन महिलाओं को लेकर कोई विशेष प्रॉडक्ट नहीं है। हां, राइडर हैं जिसके तहत कंपनियां महिलाओं को टार्गेट करती हैं।' वहीं रिलायंस लाइफ इंश्योरेंस के प्रवक्ता का कहना है कि इंश्योरेंस पोर्टफोलियो में महिलाओं की भागीदारी 10-15 पर्सेंट से ज्यादा नहीं है और उसमें से भी ज्यादातर ग्रुप इंश्योरेंस में वे इंश्योर होती हैं। आप ग्रुप इंश्योरेंस को निकाल दें तो ये आंकड़ा और कम हो जाएगा। सिग्ना टीटीके की डेप्युटी सीईओ ज्योति पुंजा ने बताया 'हमारे पोर्टफोलियो में महिलाओं की भागीदारी लगभग 15-20 पर्सेंट है। इसकी वजह उनका अपने स्वास्थ्य के तरफ बेरुखी रखना। महिलाएं अभी भी खुद को ज्यादा अहमियत नहीं देती हैं और उन्हें लगता है कि उनकी रिस्क को कवर करना जरूरी नहीं है।'